इकाई 2 संचार के पारंपरिक और आधुनिक मीडिया

*प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना संचार के पारंपरिक साधन

2.2 लोक मीडिया

2.3 संचार का इतिहास

2.4 साधन/माध्यम का चयन

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपका परिचय संसार के पारंपरिक और आधुनिक साधनों की विभिन्न पद्धतियों और प्रक्रियाओं से कराया गया है। पारंपरिक मीडिया तथा लोक मीडिया का अध्ययन भारत की समृद्ध और विभिन्न परंपराओं के संदर्भ में किया

* प्रो. जॉर्ज प्लाथोत्तम, नेहू, शिलांग

गया है। इकाई के दूसरे भाग में हम संचार के लेखन से लेकर आधुनिक साधनों के विकास का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आपः

- संचार के पारंपरिक मीडिया को समझ सकेंगे;
- पारंपरिक मीडिया की रचना को प्रभावित करने वाले घटकों का पता लगा सकेंगे;
- लोक मीडिया तथा जनता पर इसके प्रभाव को जान सकेंगे;
- भारत के कुछ प्रमुख पारंपरिक संचार मीडिया का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे;
- आधुनिक संचार मीडिया तथा उनके विकास का विश्लेषण कर सकेंगें; और
- विभिन्न आधुनिक संचार मीडिया के तुलनात्मक लाभ और हानियों की समीक्षा कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम संचार के पारंपरिक और आधुनिक साधनों का अध्ययन करेंगे। संचार एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसने अनेक शताब्दियों से मानव इतिहास की उत्पत्ति एवं विकास को स्वरूप प्रदान किया है। यह वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवर्तनों में होने वाले परिवर्तनों से निरंतर विकसित होती रहती है तथा नया रूप ग्रहण करती जाती है। आधुनिक मीडिया के आ जाने से पारंपरिक मीडिया नया रूप ग्रहण कर लेता है। पिछले कुछ दशकों में संचार इतिहास में अद्‌भुत उन्नति देखने को मिली है। परिणामस्वरूप मीडिया के अनेक नए रूप हैं। पारंपरिक मीडिया भी समाज की बदलती आवश्यकताओं मूल्यों तथा विश्व विचारों को संप्रेषित करने के लिए प्रयुक्त मीडिया विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को अनुकूलित करता रहता है।

2.2 संचार के पारंपरिक साधन

संचार के पारंपरिक साधनों का अर्थ है किसी सभ्यता विशेष में विचारों को संप्रेषित कर एवं सूचनाओं के प्रसार के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले साधन। कभी–कभी पारंपरिक मीडिया को लोक मीडिया, वैकल्पिक मीडिया या लोक साहित्य के साथ घनिष्ठता से जोड़ा जाता है। हम संचार के कुछ पारंपरिक साधनों की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं की जाँच करेंगे। इससे पूर्व हमें संचार और संस्कृति के संबंध को समझाना आवश्यक है।

2.2.1 संचार और संस्कृति

संचार और संस्कृति में गहरा संबंध है। कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार सांस्कृतिक घटकों के वर्गीकरण में बोली, कला, पौराणिक ज्ञान, धार्मिक परंपराएँ, परिवार सामाजिक–व्यवस्था तथा संस्कार शामिल है। हम देख सकते हैं कि इनमें से अधिकांश समूहों के प्रत्यक्ष संचार आयाम है। यह संबंध किसी सभ्यता में संचार के महत्त्व को दर्शाता है। समाजशास्त्री इस बात से सहमत हैं कि संचार के बिना कोई सभ्यता नहीं हो सकती। अनेक व्यक्ति संचार के सामान्य साधन के अभाव में एक. समूह में कार्य नहीं कर सकते। इसलिए सभ्यता के लिए मानव संचार व्यवस्था अनिवार्य है।

2.3 लोक मीडिया

लोक मीडिया का अर्थ है लोगों का मीडिया। लोक साहित्य और लोक मीडिया शब्द जर्मन के मूल शब्द वोल्कस (जिसे फोतक उच्चारित किया जाता है) से आया है, जिसका अर्थ होता है लोग यद्यपि लोक साहित्य लोक मीडिया के काफी नजदीक है तो भी दोनों एक–दूसरे से एकदम भिन्न हैं। लोक साहित्य शब्द का प्रयोग 1845 में विलियम थॉमस द्वारा किया गया था। लोक साहित्य में मिथक, दंत कथाएँ, लोक कथाएँ, चुटकले, कहावतें या लोकोक्तियाँ, राग, वेशभूषा, नृत्य,

नृत्य नाटिकाएँ, गान, पारंपरिक औषधियाँ तथा दीवारों पर लिखी गई सामग्री शामिल होती हैं।

लोक मीडिया का अर्थ है– ग्रामीण तथा कबीले के लोगों को उपलब्ध संचार के विभिन्न साधन। इसे प्रायः 'पारंपरिक मीडिया', 'स्वदेशी संचार प्रणाली', वैकल्पिक मीडिया', 'समूह मीडिया', 'सस्ता मीडिया' आदि भी कहा जाता है।

लोक मीडिया की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

1) एक सांस्कृतिक समूह या क्षेत्र के लोगों की भागीदारी होना।

2) सस्ता होता है, प्रायः स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री ही आवश्यक है।

3) ये समूह की औसत योग्यता पर आधारित होते हैं। यह योग्यता बिना किसी प्रशिक्षण के प्राप्त की जाती है।

4) चूँकि इनमें सबकी भागीदारी होती है अतः गुणवत्ता या संख्या का कोई मानदंड नहीं होता।

5) ये प्रचार के लिए लोगों पर आधारित होते हैं अतः इनका नियंत्रण स्वयं लोगों द्वारा किया जाता है।

6) ये व्यवसायिक नहीं होते। धन शामिल न होने से कोई कापीराइट नियम लागू नहीं होता।

7) इनको सबका समर्थन प्राप्त होता है।

8) इन्हें अवसर या जनता विशेष के अनुकूल अपनाया और पुनः उत्पन्न किया जाता है।

लोक मीडिया का समाज पर चमत्कारी प्रभाव होता है। वे सामाजिक परिवर्तन के शक्तिशाली वाहक हैं। ऐसे स्थानों में भी जहाँ आधुनिक मीडिया की महत्त्वपूर्ण पहुँच हो चुकी है वहाँ भी लोक मीडिया लोगों की धारणाओं को प्रभावित करने में समर्थ तथा किसी कार्य या परिवर्तन के लिए लोगों को सक्रिय करने में निरंतर आधिकारिक रूप से सशक्त साधन बना हुआ है। पारंपरिक मीडिया अंधविश्वासों को समाप्त करने तथा वैज्ञानिक विचारधारा स्थापित करने में अधिक शक्तिशाली हो सकता है। यह जनता में बहुत लोकप्रिय तथा विश्वसनीय है। इसलिए इसमें लोगों को समझने की उल्लेखनीय शक्ति है।

सार्वजनिक मीडिया और लोक मीडिया के बीच संबंध के बारे में सामान्य गलतफहमियाँ हैं। लोक मीडिया एक अंतःव्यैक्तिक संरचना से उत्पन्न होता है, जो सार्वजनिक मीडिया से एकदम भिन्न है। लोक मीडिया का संबंध जनता से होता है जबकि सार्वजनिक मीडिया का संबंध कुछ ही लोगों से होता है, जिनपर उनका नियंत्रण होता है। लोक मीडिया में उसका रूप–स्वरूप और सामग्री और प्रेषणकर्त्ता तथा श्रोता सब एक ही होते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संचार और संस्कृति में क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) लोक मीडिया क्या है? उनकी कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.3.1 भारत में लोक मीडिया

विद्वानों के अनुसार भारत में लगभग 6000 प्रकार के लोक मीडिया और पारंपरिक कला के रूप विद्यमान हैं। वे हमारे देश की परंपरा एवं संस्कृति को संरक्षित रखते हैं एवं संप्रेषण में मदद करते हैं। मनोरंजन करने के अतिरिक्त वे नैतिक शिक्षा भी प्रदान करते पारंपरिक मीडिया का जनता के साथ अच्छा तालमेल रहता है। पारंपरिक मीडिया सस्ता होता है तथा लोगों द्वारा अच्छी प्रकार से समझ में आने वाली भाषा या बोली का प्रयोग करता है। इसमें काफी लचीलापन भी होता है। ये अवसरों एवं जरूरतों के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं। ये सभी विशेषताएँ लोक मीडिया को संचार का प्रभावशाली माध्यम बनाते हैं।

शास्त्रीय कलाओं से भिन्न लोक रूप किसी शाही और संरक्षण पर आधारित नहीं होती लोक मीडिया की उत्पत्ति किसी ब्राह्मणवाद या भारतीय संस्कृति की किसी वैदिक धार से नहीं हई। अपितु वे प्राचीन भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए है तथा सामान्य जनजीवन की अभिव्यक्ति करने वाले वैकल्पिक मीडिया के रूप में हमेशा बने रहेंगे।

भारत के संपूर्ण उथल–पथल से भरे राजनीतिक इतिहास में लोक कलाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। लेकिन चिर–परीक्षित मूल्यों को संरक्षित करने तथा धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक वातावरण की भावनाओं और मनोभावों को उद्वेलित करने में लोगों का मीडिया होने की उनकी शक्ति निरंतर बनी रही। वास्तव में स्वतंत्रता संग्राम के तिलक और गांधी जैसे नेताओं ने आजादी के लिए व्यापक समर्थन जुटाने के लिए पारंपरिक मीडिया का प्रभावशाली उपयोग किया।

भारत में लोक या पारंपरिक मीडिया अपने स्वरूप एवं सामग्री में विभिन्न स्थानों पर परिवर्तित होता रहा है। फिर भी ऐसे मीडिया के कुछ तथ्य एक समान है। एक मुख्य विशेषता यह है कि ये अत्यंत लचीले होते हैं इनमें गानों और नृत्य, अभिनय, शारीरिक संकेत एवं भाव–भंगिमाएँ, कठपुतली, वेशभूषा आदि का मिश्रण होता है। संप्रेषण का साधन तथा व्यवहारिक स्वरूप विभिन्न संस्कृतियों के अनुरूप बदलता रहता है।

हम संचारण के पारंपरिक साधनों को तीन श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं:

i) प्रयुक्त साधन

ii) सम्मिलित व्यक्ति

iii) सामाजिक संरचनाएँ

प्रयुक्त साधनों में निम्नलिखित प्रणालियाँ गिनी जा सकती हैं:

– कहानी सुनाना

– गाना (गायन)

– भाव–भंगिमाएँ

– नाटक

– स्वांग

– कठपुतली

– संकेत करने, संदेश देने तथा बातें करने के लिए ढोल

– नृत्य

– धार्मिक अनुष्ठान, उपासना, काल्पनिक या पुराण कथा

संचार प्रक्रिया में शामिल व्यक्तियों की विशेष भूमिकाएँ होती हैं। इसमें1 शामिल हैः

– विभिन्न विचारधाराओं के नेताओं के विचार

– वक्ता

– कहानी सुनाने वाला/कहने वाला

– सूत्रधार/उद्घोषक

– मुख्य व्यक्ति/नेता

– कवि

– चारण/भाट

पारंपरिक संचार में शामिल सामाजिक व्यवस्था में स्थान, संदर्भ या परिवेश हैं, जो संचार के लिए समाज या समूह को उपयुक्त माहौल प्रदान करते हैं। इनमें निम्नलिखित हैं:

– बाजार

– गलियाँ या गलियों के नुक्कड़

– कुएँ या स्नानघर के निकट के स्थान

– चौपाल या सभाएँ

– धार्मिक संस्थाएँ

– स्वैच्छिक समूह या सहकारिताएँ

– धार्मिक सभा, विवाह, अंतिम संस्कार, पौधे लगाना, फसल कटाई आदि

– आयोजन, त्यौहार, मेले।

मौखिक संस्कृतियों में संचार के अनेक धार्मिक और सांकेतिक रूप होते हैं। मौखिक संप्रेषण कबीला समुदायों में विचारों और मूल्यों को संप्रेषित करने का बहुत ही सशक्त रूप है। पारंपरिक मीडिया में अफ्रीकी अनुसंधानकर्त्ता ने इन्हें 'ओरा मीडिया' कहा है।

संचार के पारंपरिक मीडिया के अंतर्गत् अनेक लोक मीडिया रखे जा सकते हैं जिनकी प्रायः निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:

– बिना किसी तकनीकी उपकरण के साधारण स्वरूप,

– मुफ्त या सामग्री के मूल्य के बिना भी उपलब्ध,

– जनता के विषयों से संबंधित,

– पारंपरिक तथा उत्पत्ति का पता नहीं,

– प्रस्तुतकर्त्ता तथा प्रयोगकर्त्ता में कोई अंतर नहीं,

– सीधे एक या अनेक अर्थों का संप्रेषण,

– भागीदारी, संवाद और परस्पर संपर्क एवं

– भागीदार तथा श्रोता एक समूह या इकाई होते हैं।

विभिन्न सभ्यताओं द्वारा उपयोग में लाई गई पारंपरिक मीडिया निम्नलिखित कार्य करता हैः

– सामाजिक और सामुदायिक मूल्यों का संप्रेषण करना,

– उपदेश और दीक्षा प्रदान करना,

– पारंपरिक मूल्य संप्रेषित करना,

– धार्मिक आस्था संरक्षित करना,

– वैधानिक नियम, आचरण के नियम प्रदान करना,

– कहानियाँ दृष्टांत और लोकोक्तियों संप्रेषित करना,

– सुरक्षा, कृषि कार्य जैसे सामान्य कार्यों के लिए लोगों को प्रेरित करना, एवं

– सामाजिक बंधन और संबंधों (घनिष्ठता) को सुरक्षित रखना।

लोक कला की उत्पत्ति मूल (नींव) से होती है। यह लोगों की अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उनकी भागीदारी के अलावा स्वयं द्वारा रचित स्वतः

अभिव्यक्ति है। कछ समाजशास्त्रियों ने साधारण व्यक्तियों की लोक कला का अभिजात वर्ग की उच्च संस्कृति से अंतर स्पष्ट किया है। यह सिलबर्ट सेल्वड ने लोक संस्कृति की विशेषताओं को इस प्रकार बताया है।

– लोक कला और लोकप्रिय कला समझने में आसान होती है,

– वे रोमांचकारी, राष्ट्रभक्ति और पारंपरिक रूप से नैतिक होती हैं,

– ये महान कलाओं पर संदेह करने वाले लोगों के द्वारा बहुत स्नेह से रखी जाती है,

– लोकप्रिय कलाकार गंभीर या सतही, साधारण या निपुण हो सकते हैं,

– वे सार्वभौमिक या सीमित (स्थानीय) हो सकते हैं, एवं

– उनमें प्रत्येक के साथ संप्रेषण की शक्ति होती है।

पारंपरिक लोक मीडिया समुदायों में व्यैक्तिक और साधारण संबंधों के द्वारा संप्रेषण करता है। इस प्रक्रिया में शामिल लोगों की संख्या कम होती है क्योंकि व्यैक्तिक और आमने–सामने का घटक इसके लिए अनिवार्य है। संचार के पारंपरिक मीडिया में हम भाषा, संगीत और कला को शामिल कर सकते हैं।

भारत में पारंपरिक मीडिया या लोक सांस्कृतिक संचार मीडिया के कुछ प्रसिद्ध रूप इस प्रकार हैं – कहानी कहना, तमाशा, कथा, भावई, जात्रा, कीर्तन, पावड़ा, तर्ज, कविगान, नौटंकी, कथाकट, बूराकथा, गजल, कव्वाली, मुशायरा।

कहानी कहना: यह विभिन्न प्रकार के लोक मीडिया में शायद सर्वाधिक व्यापक है। भारत में अनेक ग्रामीण समाजों में कहानी कहने की गहन परंपरा है। कहानी कहने वाला कहानी कहने में ऐतिहासिक भंगिमाएँ और तर्क वाली भाषा का प्रयोग करता है। दर्शक हँसने और शारीरिक संकेतों से प्रतिक्रिया करते हैं। कई बार

कहानी का वर्णन देर रात तक चलता रहता है। कहानी कहने वाले वेशभूषाओं और साजो–सामान का प्रयोग करते हैं। वे प्रायः वर्णन करने वाले चरित्र का उपहास करते हैं। कहानियाँ धार्मिक परंपराओं या स्थानीय पौराणिक कहानियों से मिलती–जुलती बनाई जाती है। प्रायः लोग गाँव के चौक या मैदानों में एकत्रित होते हैं।

तमाशाः तमाशा महाराष्ट्र में लोक नाट्य कला का सजीव रूप है। यह करीब चार सौ वर्ष पुराना है और पेशवाओं के समय से पूर्व से प्रचलित है। सौगंडया नामक विदूषक प्रमुख नायक है। वह मनोरंजक बाते करता है। तमाशा पुरुष और महिला दोनों कलाकारों द्वारा किया जाता है। तमाशा का पारंपरिक प्रयोग मनोरंजन और धार्मिक कथाओं के संप्रेषण के लिए किया जाता रहा है। लोगों के विचारों में परिवर्तन करने के द्वारा समकालीन, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए भी इसका माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। आजकल सरकार परिवार नियोजन जैसे विषयों को लोकप्रिय बनाने के लिए इसका प्रयोग करती है।

नौटंकीः उत्तरी भारत का लोक नाटक है, जो खुले मैदान में किया जाता है। इस लोक रूप का नाम रानी नौटंकी के नाम पर पड़ा है, जिसका प्रेमी उसके कक्ष में प्रवेश पाने के लिए छिप गया था। इसमें भी एक वर्णनकर्त्ता होता है, जिसे 'सूत्रधार' कहा जाता है। कुछ संगीत साज जैसे कैटलड्रम (मटका) और ढोलक का प्रयोग किया जाता है। संवादों को लोक धुनों में गाया जाता है।

जात्राः जात्रा जिसका शाब्दिक अर्थ है 'यात्रा' जो बंगाल और उड़ीसा में प्रसिद्ध लोक नाटक हैं। इसका नाम संभवतः अभिनय करने वालों के नाम पर पड़ा है, जो अभिनय के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। अधिकांश कहानियाँ भगवान कृष्ण और राधा की होती हैं। जात्रा लोगों में भक्ति उपासना को लोकप्रिय बनाने में सहायता करती है। बाद में इसका प्रयोग शक्ति उपासना के लिए किया जाने लगा। स्वतंत्रता संग्राम में इसका प्रयोग आंदोलन को लोकप्रिय

बनाने के लिए किया गया। इसमें सामूहिक गान (जूरी), अभिनय और आलंकारिक प्रदर्शन शामिल होता है।

भवईः गुजरात का प्रमुख लोक नाटक है। एक विदूषक या मसखरा रांगलो नायक या सूत्रधार के साथ संवाद करता है। उनका परिहास, हरकतें तथा रांगलों की भाव–भंगिमाएँ दर्शकों को हँसाती हैं। वह भूतकाल को वर्तमान से जोड़ कर आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक बुराइयों को इसमें शामिल कर लेता है। भावई में संवाद, स्वांग, कल्पना, कलाबाजी, जादू, नृत्य और गान का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न शास्त्रीय और लोकप्रिय संगीत रूपों ने इस कला को सजीव माध्यम बनाए रखा है।

कीर्तनः इस लोक कला को भी हरि कथा या हरि कीर्तन कहा जाता है। यह एक प्रकार केंद्रीकृत, एकल नाटक है, जिसमें कोई योग्य कलाकार चरित्रों और क्रियाओं की श्रृंखला का अभिन्न करता है। विश्वास किया जाता है कि कोई 150 वर्ष पूर्व यह महाराष्ट्र से कर्नाटक और तमिलनाडु में फैला। भक्ति आंदोलन से जुड़े होने के कारण कबीर और तुकाराम ने धार्मिक विश्वास का उपदेश देने तथा सामाजिक और राजनीतिक सुधार लाने के लिए इसका प्रयोग किया। गुजरात में विभिन्न प्रकार के कीर्तनों का प्रयोग किया जाता है।

गाथा गीतः भारत में कहानियाँ सुनाने के अनेक विशिष्ट गाथा गीतों का प्रचलन है। कुछ नाम इस प्रकार हैं:

आल्हा (उत्तर प्रदेश), बूरा कथा (आंध्र प्रदेश), जुगनी और वाड (पंजाब), पोवडा या पवाड़ा (महाराष्ट्र) विलूपटु (तमिलनाडू), विल्लाडिक पट्टु (केरल)।

लोक संगीतः लोगों का एक और सशक्त मीडिया है। विद्वानों के अनुसार भारत में करीब 300 प्रकार की लोक संगीत शैली है। कुछ प्रसिद्ध हैंः बौल और भतियाली (पश्चिम बंगाल), दोहा और गर्बा (गुजरात), चैती और कजरी (उत्तर प्रदेश),

कोलकली पटू (केरल), बीटू (असम), भांड और पनिहारी (राजस्थान), रौक और चकरी (कश्मीर), सुआ और ददरिया (मध्य प्रदेश), मांडो और ढालो (गोवा), बोली (पूर्वी पंजाब) और लावनी (महाराष्ट्र)।

लोक कथाएँ और दंत कथाएँ: भारत की ग्रामीण जनता इन संचार रूपों की उनकी आर्थिक या शैक्षिक स्थिति के बिना भी बहुत प्रशंसा करती है। ये रूप इनका प्रयोग करने वाले समाज की संस्कृति और परंपरा के मूल में होते हैं। ये मीडिया मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा, तो प्रदान करते हैं साथ ही सामाजिक संबद्धता तथा सौहार्द्र को भी बनाए रखते हैं। ये धार्मिक और सामाजिक मूल्यों को संप्रेषित करते हैं और सामुदायिक सदस्यों में संबंधों को मजबूत बनाते हैं।

कठपुतली: कठपुतली एक मुख्य लोक कला है, जिसका प्रयोग पौराणिक और तेल कथाओं को जोड़ने के लिए किया जाता है। इसमें काफी परिवर्तन हुए हैं और आज की अनेक परिस्थितियों में शिक्षा, मनोरंजन तथा उपचार के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कठपुतली अनुप्राणित आकृतियों की कला है, जो मनुष्य या पशु के क्रियाओं को प्रदर्शित करती है। कठपुतली की उत्पत्ति मनोरंजन के लिए न होकर उपासना प्रथा के रूप में हुई थी। इसकी बनावट एवं प्रस्तुतीकरण में व्यापक परिवर्तन के बावजूद यह कला निरंतर बनी हुई है। भारत में निम्नलिखित चार प्रकार की कठपुतलियाँ हैं: –

i) **सूत्रधारिका:** कठपुतलियाँ काले धागों से संचारित होती है। वेशभूषा स्थानीय संस्कृति के अनुरूप होती है। इस प्रकार की कठपुतलियाँ राजस्थान, उड़ीसा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु में प्रचलित है।

ii) **छड़ी वाली कठपुतलियाँ:** इनकी वेशभूषा जात्रा की वेशभूषा की तरह होती हैं। ये आकार में बड़ी होती है तथा बांस पर बंधी होती है, जिसे कठपुतली वाले की कलाई से बांधा जाता है। यह रूप पश्चिम बंगाल में काफी प्रचलित है।

iii) **छाया कठपुतलियाँः** ये चमड़े से बनी हुई समतल आकृतियाँ होती हैं, जिन्हें वनस्पति के रंगों से रंगा जाता है। इन पर पीछे से रोशनी डाली जाती है, जिससे छाया पारदर्शी कपड़े के पर्दे पर प्रकट होती हैं। यह रूप आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और उड़ीसा में बहुत प्रचलित है।

iv) **हस्त कठपुतलियाँः** इन्हें दस्ती कठपुतलियाँ भी कहा जाता है। कठपुतली वाला इन्हें इनका संचालन तथा क्रियाशीलता हाथ से करता है। इस प्रकार की कठपुतलियाँ उड़ीसा, केरल और तमिलनाडु में प्रचलित है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) लोक मीडिया के कुछ कार्यों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत में पाँच प्रकार के प्रसिद्ध पारंपरिक मीडिया के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) कठपुतली कला क्या है? भारत में विभिन्न प्रकार की प्रचलित कठपुतलियाँ कौन–कौन सी हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 संचार का इतिहास

संचार कलाओं का अस्तित्व संभवतः मानव जाति के उदय काल से ही है क्योंकि विचारों, और अनुभवों के आदान–प्रदान के अभाव में जीवन का अस्तित्व नहीं हो सकता। हो सकता है संचार का आरंभिक रूप आवाज हो। एक दूरी तक अपने

अनुभव और सूचना संप्रेषण के लिए चिल्लाने का प्रयोग किया जाता था। उस समय अधिकांश सूचनाएँ मौखिक रूप से संप्रेषित की जाती थीं। आने वाली पीढ़ी को कहानियाँ और गाने मौखिक रूप से ही सिखाए जाते थे। जब अत्यधिक व्यापक क्षेत्र में फैले लोगों पर शासन करने तथा राजनीतिक रूप से नियंत्रण करने में मौखिक संप्रेषण अपर्याप्त रहने पर ही लिखित रूप का विकास' हुआ होगा।

2.4.1 आरंभिक विकास

लिखित संप्रेषण के प्राचीनतम रिकार्ड का समय देखने पर हमें दक्षिण यूरोप में लास्कोक्स और आल्टीमीरा की गुफाओं में चित्रकारियाँ मिलती हैं। विश्वास किया जाता है कि करीब 35,000 वर्ष पूर्व अज्ञात कलाकारों ने गवल, लगाम वाले हिरण, जंगली अश्व यहाँ तक कि अज्ञात पशुओं और शिकारी व्यक्तियों के अद्‌भुत भित्ति चित्र बनाए हुए हैं।

ये चित्रकारियाँ शिकार से संबंधित हैं। संभवतः ये प्रतीकात्मक चित्रकारियाँ उन घटनाओं को अच्छी तरह याद रखने तथा आने वाली पीढ़ी की जानकारी के लिए सहायता प्रदान करती थी। इनसे याद्‌दाश्त में वृद्धि होती थी। समय के अंतराल में इन प्रतीकात्मक प्रदर्शनों में मानक रूपों का प्रवेश होने लगा।

पृथ्वी पर ऐसे अनेक चित्र बर्तनों, टोकरियों, छड़ियों, वस्त्रों, दीवारों, पशुओं की खचाओं (खालों), छाल, पत्थरों और यहाँ तक की पत्तियों पर भी देखने को मिलते हैं। इनमें संकेतों और चिह्नों के साथ चित्रकला और कलात्मक भाव भी होता है। प्राचीन लोग अनेक प्रकार के साधन, जैसे : गोदना, दागना, आभूषण, मुकुट, वस्त्रों आदि का प्रयोग अपने स्तर, हैसियत, शक्ति, संपन्नता, उपलब्धि, व्यवसाय और पारिवारिक सदस्यता दर्शाने के लिए करते थे।

2.4.2 लिखित रूप

साहित्य का मौखिक रूप से लिखित रूप अपनाने में अत्यधिक समय लगा होगा। कुछ मानव वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे पूर्वजों ने संप्रेषण के लिए भाषा का आरंभिक ज्ञान कोई – 3,00,000 वर्ष पूर्व आरंभ किया होगा। लेकिन मात्र करीब 4000 वर्ष ई. पू. ही विचारों के संप्रेषण में कोई एकरूपता प्रचलित हुई। विचारों को कुछ लेखा चित्र प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा। चूँकि विचारों की अभिव्यक्ति के लिए लेखाचित्रों का प्रयोग होने लगा था। इसलिए इन्हें चित्रलेखीय लिखाई कहा जाने लगा क्योंकि वस्तु चित्र विचारों का प्रदर्शन करते थे इसलिए ऐसे चरित्रों को ऑडियोग्राम (भाव चित्र) तथा लिखावट को ऑडियोग्राफिक (भाव लिपि) कहा जाने लगा। ज्ञात प्राचीन भावलिपि पद्धति मिस्रवासियों, चीनियों (मायस) लोगों से संबंधित है। भाव लिपियों के साथ एक कठिनाई यह थी कि विभिन्न शब्दों का प्रतिनिधित्व करने के लिए सैकड़ों या हजारो भाव चित्रों को जानने की आवश्यकता पड़ती थी। इसलिए एक सरल पद्धति का विकास हुआ, जिसका सबंध विचारों के भाव प्रतीकों से न होकर ध्वनि के साथ था। इस प्रकार फोनोग्राम (ध्वनि चित्र) का प्रचलन हुआ। फोनोग्राम रेखा प्रतीक या चिह्न है, जो किसी भाषा विशेष के बोलने वालों के बीच परंपरा या किसी नियम के द्वारा विशिष्ट ध्वनियों से जुड़े होते हैं। अक्षर फोनोग्राम के उदाहरण हैं।

विश्वास किया जाता है कि लेखन की हमारी ध्वनि प्रणाली प्राचीन सुमेरियाई कला लेखन से उत्पन्न हुई। सुमेरियाई लोग किसी ध्वनि के लिए निर्धारित किसी विशेष स्वरूप को विचार पर आरोपित करते थे। समय के साथ विचारों में सुधार हुआ था तथा वे सरल बनाए गए। इसके बाद लेखन विकास की गतिविधियाँ मिस्र और यूनानी सभ्यताओं में देखी जा सकती हैं। लेखन के लिए प्रयुक्त सामान्य साधन थे पत्थर, पटेरा, तथा नील नदी के किनारे उगने वाले वृक्षों की छाल। पटेरा लेखन के लिए बहुत विकसित साधन थे क्योंकि इसे समतल किया जा सकता था, एक साथ सिलाई की जा सकती थी तथा गोलाई में मोड़ा जा सकता था। लेखन के

दूसरी प्रसिद्ध सामग्री चर्म पत्र (तैयार की गई भेड़ की खाल) स्थायी, जो बछड़े की खाल से तैयार की जाती थी। इस पर लिखित अक्षर पटेरा से अधिक समय तक सुरक्षित रहते थे।

रोमनवासियों ने अक्षरों में सुधार कर लेखन कला का शोधन किया तथा लेखन के लिए अधिक स्थाई सामग्री प्रदान की। रोमन स्मारकों में व्यापक रूप से प्रयुक्त बड़े अक्षर अंग्रेजी भाषा के बड़े अक्षर हैं उनके छोटे आकार के छोटे अक्षर रूप हैं, जिनका आठवीं शताब्दी में काले मेंगने के प्रभाव में केरोलिंगमन लिपि में सुधार किया गया, जो आज के अंग्रेजी भाषा के छोटे अक्षर हैं। अंग्रेजी में प्रयोग किए जाने वाले अक्षर इन्हीं में से लिए गए हैं, इसलिए इनको रोमन लिपि के नाम से जाना जाता है।

जब रोम पर निरंतर आक्रमण हुए तो मठों में साधुओं ने भाषा और लिखित सामग्री को हाथ से ढक कर कठोर बनाया तथा संरक्षित किया। इस प्रकार शब्द मैनु स्क्रिप्ट (पांडुलिपि) प्रयोग में आई। मठ विशेष स्थान बन गए जहाँ पुस्तकालयों का विकास हुआ और पुस्तकों को सुरक्षित रखा गया।

2.4.3 मुद्रण/छपाई

मुद्रण का आविष्कार कागज निर्माण के बाद आरंभ हुआ। विश्वास किया जाता है कि 105 ई.पू. तक चीनी मंत्री तसई लूम ने पहली बार कागज का आविष्कार किया। अरबवासियों के पास 751 में कागज था लेकिन यह यूरोप में लगभग 1100 ई. में मूर्स के माध्यम से स्पेन होकर पहुँचा। कागज का इतना व्यापक प्रयोग हुआ कि 100 वर्षों में ही यूरोप के अनेक भागों में कागज का निर्माण होने लगा।

चीन में पहली बार 846 ई.पू. मुद्रण का आविष्कार हुआ। चीनवासियों ने मुद्रण के लिए लकड़ी की प्लेटों का इस्तेमाल किया। सजावट एवं आभूषणों में मुद्रण प्रणाली का प्रयोग पहले से ही 200 ई. पू. विद्यमान था। लेकिन एक जर्मन

स्वर्णकार गुटनबर्ग ने मैंज में पहली बार लगभग 1450 में सचल टाइपों (अक्षरों) का प्रयोग कर आधुनिक मुद्रण का आविष्कार किया। उसके द्वारा मुद्रित पहली पुस्तक बाईबल का एक भाग था। इस पुस्तक को गुटनबर्ग की बाईबल कहा जाता है।

14वीं शताब्दी की समाप्ति तक मुद्रण विश्व के विभिन्न भागों में फैल चुका था। विलियम कैक्सटोन ने जर्मनी में मुद्रण कला लिखी और उसने 1476 में इंग्लैंड में अपना मुद्रणालय (प्रिटिंग प्रेस) स्थापित किया। अमेरिका में पहली प्रिटिंग प्रेस जॉन पाबलों द्वारा 1539 में मैक्सिको शहर में लगाई गई। भारत में पहली प्रिटिंग प्रेस 1556 में पुर्तगाली जेसुट्स द्वारा गोवा में स्थापित की गई। सबसे पहली प्रिटिंग प्रेस ईसाई पादरियों द्वारा लगाई गई। गोवा में पहली प्रिटिंग प्रेस की स्थापना के बाद 250 वर्षों में संपूर्ण भारत में मुद्रण का प्रसार हो गया। इसके अतिरिक्त पुर्तगाल, ब्रिटेन, स्पेन तथा दानिस वासियों ने मुद्रण तकनीक के प्रसार में योगदान दिया।

भारत में मुद्रण के आगमन से अनेक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति में सहायता मिली। भाषाएँ अपनी लिपि में लिखी जाने लगी तथा शब्दावली और व्याकरण का विकास हुआ। पहले से मुद्रित अनेक पुस्तकों के अनुवाद किए गए।

गुटनबर्ग के आविष्कार से विश्व में वास्तविक रूप से परिवर्तन हुआ। पूरे विश्व में मुद्रण के विस्तार से भाषाओं की उत्पत्ति हुई और विकास हुआ तथा स्कूलों और शैक्षिक कार्यों की आवश्यकता बढ़ गई। विज्ञान, मनोविज्ञान तथा धर्म में हुए विकास जनता तक पहुंचने लगे। संक्षेप में कहा जाए तो मुद्रण ने ज्ञान को संरक्षित रखने तथा विस्तार में बहुत सहायता प्रदान की। मुद्रण तकनीकों में विकास तथा वृद्धि, कागज की उपलब्धता तथा पढ़ने की चाह ने प्रेसों को बहुत बढ़ावा दिया।

2.4.4 पुस्तकें और समाचार पत्र

आज बिना पुस्तकों के जीवन के बारे में सोचना असंभव है। पुस्तकों के मुद्रण और उनके फैलाव से ज्ञान की वृद्धि और संरक्षण में प्रोत्साहन मिलता है। पुस्तकों के छपने से विचारों का विस्तार सरल हो गया तथा सामाजिक बाधाओं को तोड़ने में सहायता मिली। इसने नए सामाजिक संबंधों की स्थापना का मार्ग खोल दिया, क्रांतियों के होने में सहायता प्रदान की तथा वैज्ञानिक विकास ने खोजों को बढ़ावा दिया। यद्यपि पुस्तकों के अनेक कार्य अन्य माध्यमों से भी किए जाते हैं तो भी पुस्तक निर्माण निरंतर एक समृद्ध उद्योग बना हुआ है। जब तक मानव सभ्यता का अस्तित्व रहेगा, पुस्तकें कभी समाप्त नहीं होंगी।

समाचार पत्र जनता का सबसे पुराना माध्यम था। यह अधिकांश जनता तक पहले तथा सबसे शीघ्र पहुँचने वाला संचार का एक प्रकार था। पहला समाचार पत्र 1609 में जर्मनी में प्रकाशित हुआ। एक दशक के अंदर ही बेल्जियम, नीदरलैंड तथा ब्रिटेन से भी समाचार पत्र छपने लगे। रेडियो और टेलीविजन के आने तक समाचार पत्र शीघ्रतम सार्वजनिक माध्यम बना रहा। गति के संदर्भ में रेडियो और टेलीविजन ने समाचार पत्र को पीछे छोड़ दिया लेकिन समाचारों और घटनाओं के गहन विश्लेषण में समाचार पत्र ही पाठकों का उद्देश्य पूरा करता है।

भारत में प्रथम समाचार पत्र 1780 में जेम्स ओगस्तस हीके द्वारा आरंभ किया गया। इसे बंगाल गजट कहा गया। हीके को गिरफ्तार कर जेल में डाला गया तथा प्रेस की आजादी का निडर अगुवा होने और अंग्रेजी शासकों की भ्रष्ट परंपराओं का खुलासा करने के कारण उसे वापस ब्रिटेन भेज दिया गया। हीके का समाचार पत्र बंद होने के छह साल के अंदर मद्रास (मद्रास कूरियर) और बंबई (द बाम्बे हेराल्ड) नामक कई समाचार पत्र आरंभ हुए। भारतीय भाषा पत्रकारिता के संस्थापक शेरामपोर के पादरी थे। समाचार दर्पण प्रथम भारतीय भाषा की पत्रिका थी। तब से अंग्रेजी भाषा और स्वदेशी भाषा प्रेस धीरे–धीरे बढ़ती गई। भारत में प्रेस ने आजादी के संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता

आंदोलन के कुछ नेता तिलक, गांधी आदि संपादक और लेखक भी थे। भारत में प्रेस को काफी आजादी है। आंतरिक आपात काल के दौरान कुछ अवधि को छोड़ कर यह भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को शक्तिशाली बनाने का साधन भी प्रेस है।

2.4.5 सिनेमा

सिनेमा या चलचित्रों का इतिहास जैसा कि हम जानते हैं करीब एक शताब्दी पुराना है। चलचित्र स्थिर चित्रों की एक श्रृंखला होती है, जिसे पर्दे पर इतनी तेजी से प्रदर्शित किया जाता है कि देखने वालों को गति का अनुभव होता है। वास्तव में सिनेमा शब्द यूनानी शब्द 'किनेमा' से आया है, जिसका अर्थ, गति होता है। सिनेमा के विकास के तीन चरण हैं:

1) चित्रों को रिकार्ड करना

2) आवाज आना

3) रंगीन होना

जैसा कि हम जानते हैं कि सिनेमा के आविष्कार के पहले कई विकास हो चुके थे। पहला प्रयास था फोटोग्राफी का आविष्कार जो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ। जॉर्ज ईस्टमैन, 1884 तथा एडिसन और डिक्सन ऐसे पथप्रदर्शक थे, जिनके कार्यों ने फ्रांस के लियोन शहर में लूमियर भाइयों द्वारा किए गए सिनेमा के आविष्कार में बहुत मदद की। लूमियर भाइयों ने 1895 में पहली फिल्म का निर्माण किया। इन्होंने 35 मिनी फिल्म सामग्री का प्रयोग किया। यह मूक फिल्म थी, जिसमें संगीत उपकरणों या व्यक्तियों द्वारा मौखिक संवाद संप्रेषित किया गया। चित्र के साथ आवाज वाली फिल्मों के आविष्कार से बोलने वाली फिल्में बन गई। 1920 के दशक तक फिल्मों में साउंड ट्रैक बन गए थे।

अनेक आरंभिक फिल्मों की अवधि केवल एक या दो मिनट की होती थी। बाद में विचारों और कहानियों के साथ लम्बी अवधि की फिल्में बनी, जिन्होंने लोगों में रुचि पैदा की। ये फिल्में काफी हाऊस और सैलूनों से निकल कर सुसज्जित सिनेमाघरों में पहुंच गई। फिल्मोद्योग संपन्न और बड़ा व्यवसाय बन गया।

भारत में सिनेमा 1896 में बंबई में लूमियर भाइयों की एक प्रदर्शनी से आरंभ हुआ एच.एस. भटवाडेकर जिन्होंने प्रदर्शनी देखी थी प्रथम भारतीय न्यूजरील रिटर्न ऑफ रैंग्लर पराजेपे बनाई। बंबई के एक मुद्रक दादा साहब फाल्के ने अपनी प्रथम फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' 1913 में बनाई। फाल्के ने सौ अन्य फिल्में भी बनाई।

सिनेमा जन संचार का एक माध्यम है, जिसका भारत में काफी प्रभाव है। भारत बड़े फिल्म निर्माताओं में से एक है। फिल्में मुख्य रूप से भारत में मनोरंजन का साधन रही हैं लेकिन इन्होंने जन समूह को शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के संदेश प्रदान करने की भी भूमिका निभाई है। डाक्यूमेंट्री फिल्में भी विभिन्न राष्ट्रीय विषयों के बारे में सूचनाएं प्रदान करती थी। फिल्में अपने गुणों के कारण विभिन्न तत्त्वों जैसे चित्र, आवाज, गति और नाटक का संयोजन करके प्रभाव उत्पन्न करती है और परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बन गई है। भारत में फिल्मी माध्यम ने सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ दिया है क्योंकि दृश्य का सार्वभौमिक प्रभाव पड़ता है।

2.4.6 प्रसारण और रेडियो

प्रसारण अत्यधिक दूरी तक आवाज और तस्वीर के संप्रेषण को संभव बनाता है। टेलीग्राफ और टेलीफोन महत्त्वपूर्ण आविष्कार थे, जिनसे संचार तकनीक में बाद के विकासों को और सरल बना दिया। सैमुअल मॉर्स ने 1835 में विद्युत के प्रयोग से कूट संदेश संप्रेषित करने के लिए टेलीग्राफ का आविष्कार किया। एक जर्मन वैज्ञानिक हेनरिच हर्टज ने रेडियो तंरगों की उपस्थिति का प्रदर्शन किया। 1897 में गुग्लील्मो मारकोनी ने 22 वर्ष की आयु में अत्यधिक दूरी तक प्रथम बेतार संदेश

प्रेषित किया। इस प्रकार रेडियो का जन्म हुआ। यह अत्यधिक दूरी तक संदेश प्रेषण का सशक्त माध्यम बन गया।

दो दशकों के अंदर रेडियो ने प्रायोगिक अवस्था पार कर ली और जन संचार का महत्त्वपूर्ण साधन बन गया। रेडियो मनोरंजन और सूचना का सशक्त माध्यम बन गया। इससे विचारों के प्रसारण में सहायता मिली। युद्ध के दौरान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा औपनिवेशिक शक्तियों को समुद्र में जहाज के सार्थक संपर्क बनाने में समर्थ बना दिया। राजनैतिक नेताओं ने राष्ट्रों को संदेश देने के लिए रेडियो का प्रयोग किया।

2.4.7 टेलीविजन

दूसरे विश्व युद्ध के तुरंत बाद रेडियो का शक्तिशाली माध्यम — टेलीविजन द्वारा पीछे छोड़ दिया गया। टेलीविजन प्रसारण के प्रयोग 1920 के दशक के आरंभ में शुरू हो गए थे। पिक्चर ट्यूब, विद्युत कैमरा तथा टी वी पर ग्रहणकर्त्ता सहित अनुसंधानों की श्रृंखला अगले दशक में जाती थी। एन बी सी तथा बी बी सी ने क्रमशः न्यूयार्क तथा लंदन में अपने टेलीविजन केंद्र स्थापित कर लिए थे। दूसरे विश्वयुद्ध ने टेलीविजन की उत्पत्ति को बाधित कर दिया था। 1960 के दशक तक रंगीन टेलीविजन का प्रचलन हो गया था।

1962 में प्रथम संचार उपग्रह अर्ली बोर्ड के छोड़े जाने से उपग्रह संचार क्षेत्र आरंभ हो गया। उपग्रह ने भूमि स्थित केंद्र से अंतरिक्ष में स्थित उपग्रह से तथा पुनः पृथ्वी पर संपर्क करने के लिए सिगनलों को ऊपर भेजना तथा फिर नीचे प्राप्त करना संभव बना दिया। अप लिंक करना एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा भूमि स्थित केंद्र से सिगनल भौगोलिक स्थिर संचार उपग्रहों को भेजे जाते हैं। इन सिगनलों को डाउन लिंक कर केबलों या डिश एंटीना के माध्यम से घर स्थित टेलीविजन द्वारा ग्रहण किया जा सकता है।

टेलीविजन प्रसारण की सीमाओं ने केबल टेलीविजन के आविष्कार को जन्म दिया। केबल टी वी केंद्र से प्राप्त कार्यक्रमों को वायुमंडल के माध्यम की अपेक्षा तार के द्वारा वितरण करने की प्रक्रिया थी। यह एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें नियंत्रक या डिश एंटीना इलेक्ट्रॉनी सिगनलों को प्राप्त करता है तथा केबल के माध्यम से अनेक घरों को प्रेषित करता है। उपग्रह संचार प्रणाली ने आज विश्व को एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित कर दिया है। आज हमारे पास विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों सहित अनेक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय चैनल मौजूद हैं। हमारे घरों में सीधे ही (डी.टी.एच.) टेलीविजन, बहुमाध्यम तथा घरेलू सिनेमा, डी वी डी और वी सी डी इत्यादि की पहुँच के कारण तथा मीडिया के इस प्रयोग से लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ, जिसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

भारत में टेलीविजन 1959 में आरंभ में हुआ। फिर भी भारत में टेलीविजन सेटों का उत्पादन 70 के दशक में ही आरंभ हो सका। 1976 में रेडियो और टेलीविजन एक ही इकाई के अंतर्गत् संचालित होते थे, जिनमें विभाजन किया गया और अलग से दूरदर्शन की स्थापना हुई।

1967 में भारत में टेलीविजन को उपग्रह शिक्षा टेलीविजन प्रयोग (एस.आई टी. ई.) कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा के लिए सार्वजनिक माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाने लगा था।

टेलीविजन, भारत में परिवर्तन के लिए, राष्ट्रीय निष्ठा संवर्धन के लिए, लोगों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए, परिवार नियोजन एवं जनसंख्या नियंत्रण में प्रगति के लिए, कृषि विकास के लिए, ग्रामीण विकास के लिए, खेलों और क्रीड़ा जगत को बढ़ावा देने के लिए, महिला और बाल कल्याण को बढ़ावा देने के लिए, राष्ट्रीय भावना पैदा करने के लिए तथा देश को कलात्मक और सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने के लिए, प्रेरक के रूप में प्रयोग किया जाता है।

टेलीविजन के अनियंत्रित प्रयोग में कुछ जोखिम भी देखे गए हैं। विकासशील देशों में अधिकांश टेलीविजन कार्यक्रम पश्चिम विशष कर अमेरिका से आयात किए जाते हैं।

अनुमान है कि 1970 के दशक में अमेरिका से प्रतिवर्ष 150,000 घंटे के टेलीविजन कार्यक्रमों का निर्यात किया गया। 1983 में 69 देशों में किए गए एक अध्ययन से पता चला कि उन्होंने एक तिहाई या इससे अधिक कार्यक्रमों को अन्य देशों से आयात किया अफ्रीका में 40 से 60 प्रतिशत तक टेलीविजन कार्यक्रम आयात किए जाते हैं। संस्कार विश्व दृष्टि और सामाजिक मूल्यों के साथ जुड़े हुए गंभीर परिणामों के कारण यह पता अनुचित है। टेलीविजन स्वदेशी संस्कृतियों की वृद्धि को क्षति पहुँचा कर सार्वभौमिक संस्कृति का मुख्य एजेंट बन गया है।

टेलीविजन एक व्यसनकारी माध्यम भी है, जो लोगों को स्वापक भी बना सकता है। शिक्षकों ने बताया कि टेलीविजन देखने से शिक्षा प्रक्रिया में बाधा आती है। टेलीविजन अन्य सामाजिक गतिविधियों को भी प्रभावित करता है जैसे अवकाश और मनोरंजन, खेल संगीत, मनोरंजन, धर्म आदि। टेलीविजन कार्यक्रमों से चित्रित हिंसा और समाज में वास्तविक हिंसा का परस्पर संबंध होने का अनेक सामाजिक वैज्ञानिकों और संचार विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन किया गया है।

2.4.8 इंटरनेट

टेलीफोन की सहायता से दूर स्थित रखे दो कम्प्यूटरों को जोड़ा जा सकता है तथा डाटा शीघ्रता से स्थानांतरित किया जा सकता है। इस प्रकार डाटा स्थानांतरण प्रक्रिया को इलेक्ट्रॉनिक मेल (ई–मेल) कहा जाता है। यह इंटरनेट का आधार है। इंटरनेट एक सार्वभौमिक प्रणाली है, जिसके द्वारा डाटा स्थानांतरण के लिए, एक कम्प्यूटर को दूसरे कम्प्यूटर से जोड़ा जा सकता हैं। इस प्रणाली को मोडमो के माध्यमों से कम्प्यूटरों को जोड कर विश्व संबद्धता को प्राप्त करने के लिए संपूर्ण बनाया गया है। इस प्रणाली में एक कम्प्यूटर से दूर स्थित कम्प्यूटर

से शीघ्र सूचना स्थानांतरण को सरल बना दिया है। इस क्षेत्र में और अधिक विकासों ने वेब साइटों की उत्पत्ति को जन्म दिया। वेब साइट के माध्यम से डाटा प्राप्त किया जा सकता है। आज विभिन्न वेबसाइटों पर पर्याप्त मात्रा में सूचना और डाटा उपलब्ध हैं और कम्प्यूटर के की–बोर्ड पर कुछ स्ट्रोक लगाकर कोई भी उन्हें आसानी से प्राप्त कर सकता है। भारत में इंटरनेट की उपलब्धि पहली बार 1995 में विदेश संचार निगम लिमिटेड (वी.एस.एन.एल.) द्वारा प्रदान की गई। ब्राड बैंड कन्केटिविटी के कारण साइबर कैफ कुकरमुत्ते की तरह उग गए हैं तथा संचार के इन प्रचलित माध्यमों से प्रत्येक व्यक्ति सम्पर्क साधने में सफल हो गया है।

2.4.9 संचार के क्षेत्र में आगामी विकास

संचार के अनेक मीडिया में आज संचार क्रांति पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला माध्यम है टेलीफोन, जो केवल उस पार आवाज संप्रेषण का माध्यम रहा है। अब संचार का मुख्य उपकरण बन गया है, जिसने कम्प्यूटर और फैक्स मशीनों को भी जोड़ दिया है। संचार क्षेत्र में होने वाली एक बड़ी क्रांति है सैल्यूलर फोन। सैल्यूलर फोन की उत्पत्ति के बाद वर्तमान में अनेक विकसित अनुसंधान और प्रयोग किए जा रहे हैं ताकि संचार प्रक्रिया में सुधार के लिए एक श्रेष्ठ सैल्यूलर फोन का इस्तेमाल किया जा सके।

दृश्य तकनीक के आगमन से चित्रों को स्कैनिंग और दृश्य संप्रेषण ने मुद्रण उद्योग के संचालन में भी बहुत सहायता प्रदान की है।

अब ऑडियो और वीडियो कैसेट का स्थान कम्पैक्ट डिस्क (सी डी) ने ले लिया है, जिसमें आवाज लिखित सामग्री और चित्र भी होते हैं। इसी प्रकार वीडियो कम्पैक्ट डिस्क (वी सी डी) और वीडियो कम्पैक्ट डिस्क प्लेयर, वीडियो कैसेट रिकार्डर तथा वीडियो कैसेट प्लेयर का स्थान ले रहे हैं।

संचार प्रक्रिया को गति प्रदान करने के लिए सूचना तकनीक में नए मार्ग आ रहे हैं, हम मीडिया के विभिन्न रूपों के परस्पर संबंधों के बारे में अधिक सचेत भी हो रहे हैं। उदाहरण के लिए, ऑफ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बीच किसी भेद के बारे में कहना कठिन है। ये दोनों अलग–अलग तत्त्व नहीं है क्योंकि प्रिंटिंग स्वयं अनेक इलेक्ट्रॉनिक आविष्कारों से बहुत अधिक प्रभावित हैं। टेलीफोन, टेलीविजन, संचार उपग्रह, कम्प्यूटर और अन्य तकनीकी विकासों को नए संदर्भो में संपूर्ण बनाया गया है ताकि वे क्रांतिकारी संचार में सूचना का श्रेष्ठतम मार्ग प्रदान कर सके।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) आधुनिक प्रिंटिंग का आविष्कार किसने किया? वर्णन करें कि प्रिंटिंग ने संचार विकास में कैसे सहायता की।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारतीय संदर्भ में टेलीविजन के कुछ लाभ बताइए। टेलीविजन से जुड़े कोई दो जोखिमों का वर्णन कीजिए। .

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) इंटरनेट क्या है? यह संचार प्रक्रिया में कैसे सहायता करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 साधन/माध्यम का चयन

संचार के विभिन्न मीडिया चाहे पारंपरिक हों या आधुनिक, उनकी अपनी विशेषताएँ, लाभ और हानियाँ हैं। उनकी प्रभावशीलता अनेक तथ्यों पर निर्भर करती हैं। उनके तुलनात्मक लाम और हानियाँ हमें उनकी स्थिति के बारे में बताते हैं।

किसी संदेश विशेष को संप्रेषित करने के लिए विशेष तौर पर जनता के लिए संचार माध्यम का चयन बड़ी सावधानी से करना चाहिए। इसमें संदेश, माध्यम की उपलब्धता तथा जनता या ग्रहण करने वालों की विशेषताओं जैसे तथ्यों पर विचार करना चाहिए। संचार को प्रभावशाली बनाने के लिए भागीदारी तथा फीडबैक अनिवार्य है।

कुछ संदेशों, विचारों, सामाजिक विचारधाराओं को संप्रेषित करने के लिए किसी भी व्यक्ति को मनमाने ढंग से किसी भी माध्यम का चयन नहीं करना चाहिए। माध्यम का चयन सावधानीपूर्वक तथा उद्देश्य, लक्ष्य और सार्थकता, जनता की विशेषताएँ, उनकी पृष्ठभूमि. शिक्षा का स्तर, आर्थिक और सामाजिक स्थिति, आयु, शिक्षा, माध्यम के बारे में जानकारी आदि के साथ ताल–मेल का ध्यान करके किया जाना चाहिए।

निम्नलिखित सूची विभिन्न प्रकार के मीडिया के संभावित लाभ और हानियाँ प्रस्तुत करती हैं। चूँकि हमने पारंपरिक मीडिया के बारे में विस्तृत चर्चा की है इसलिए इस भाग में उन्हें शामिल नहीं किया गया है।

माध्यम	लाभ
प्रिंट मीडिया	किफायती सामान, कागज, स्याही, शीघ्र एवं सरल उत्पादन प्रक्रिया, एक व्यक्ति संपूर्ण कार्य कर सकता है। विषय तक पहुँचने के कई तरीके, संदर्भ संभावनाएँ व्यापक, सीमित वितरण, दीर्घकाल रहने वाला – संदर्भ के लिए हमेशा उपलब्ध रहने वाला।

पत्रिका	नैसर्गिक, उद्देश्य प्रधान, प्रायः जनता को प्रभावित करने वाली आकर्षक रंग एवं तस्वीरों का प्रयोग, शानदार, चिकनी, रखी जाने की संभावना, एक दूसरे को दी जाने वाली जिससे अधिक व्यक्ति पढ़ते हैं।
समाचार पत्र	क्षेत्रीय रूप से केंद्रीयकृत, अपेक्षाकृत सस्ते जो सभी वर्गों के लिए उपयुक्त, अल्पकालीन अवधि वाले, अधिक नवीनतम (दैनिक, साप्ताहिक) सामग्री पर चर्चा और भागीदारी, विश्वसनीय एवं प्रभावी माने जाते हैं।
पर्चे एवं विवरणिकाएँ	विशिष्ट जनता को भेजे जा सकते हैं। संदेश विस्तृत रूप से किया जा सकता है। भावी संदर्भों के लिए उपलब्ध रहते हैं। अनेक आकार/स्वरूप और रंगों में उपलब्ध होने की संभावनाएँ, आकर्षक प्रस्तुतीकरण और विवेकपूर्ण वितरण।
प्रत्यक्ष पत्र	कुछ खास लोगों के लिए उपयुक्त, संदेश व्यक्तिगत हो सकता है। पाठक द्वारा कार्रवाई करने के लिए उपाय बताना आसान, अन्य विज्ञापनकर्त्ताओं से कोई प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा नहीं।
माध्यम	**हानियाँ**
प्रिंट मीडिया	स्थिर, एक जैसा, नकारात्मक संबंधों के लिए जाना जा सकता है, अव्यैक्तिक स्वरूप, धारदार बनाना मुश्किल, खर्चीला और कठिन वितरण, प्रयोग के बाद रद्दी हो सकता है।
पत्रिका	अंतिम तिथि काफी आगे हो सकती है इस प्रकार समय उपयुक्त नहीं होता। हो सकता है, बाजार स्थानीय न हो, वितरण मंहगा तथा कठिन।
समाचार पत्र	संदेश का जीवन अल्प, सामग्री को सही समय पर हासिल करना अत्यंत महंगा, प्रायः संदेश संवेदनशील होते हैं।

पर्चे एवं विवरणिकाएँ	उत्पादन तिथि से काफी विलम्ब से मुद्रण तथा उत्पादन महंगा, प्रभावशीलता को मापना कठिन।
प्रत्यक्ष पत्र	अधिकांश पत्र रद्दी होने के रूप में अप्रचलित, पत्रों की सूची को अद्यतन करना और संभालना बहुत कठिन कार्य, खर्चीला तथा समय की अधिक खपत, डाक द्वारा भेजना खर्चीला परिणाम जानना कठिन।
माध्यम	**लाभ**
टेलीविजन प्रसारणः	उच्च गुणवत्ता वाला साधन हमेशा अत्यधिक दर्शक, विश्वसनीय और प्रभावी, अत्यधिक संपन्न दृश्य संभावना, लोगों और उनके घरों तक आंतरिक पहुँच, सृजनात्मक, कलात्मक और संप्रेषण संभावनाएँ हैं।
दृश्य टेपः	प्रयोग करना और जानना आसान, नवीन उत्साही माध्यम, प्रसारण की तुलना में किफायती, उत्पादन के लिए समूह या दलों की भागीदारी, सुवाह्य उपकरण, बार–बार प्रयोग करने वाला टेप, सस्ती, पीछे भी तुरंत देखा जा सकता है।
रेडियोः	सस्ता संगीत और अन्य कार्यों का सृजनात्मक उपयोग संभव, कम मूल्य सुगम, सुवाह्य, ग्रामीण क्षेत्र में टेलीविजन की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय साधन, एक व्यक्ति या समूह द्वारा प्रयोग किया जा सकता है। श्रोताओं का चयन करना संभव, अनुकूलन, संपादन, संशोधन तथा अद्यतन करने में आसान। कल्पना का महत्त्वपूर्ण रूप से सृजनात्मक प्रभावोत्पादकता।
फिल्म की उपलब्धताः	अत्यधिक दर्शकों की संभावना,

	शक्तिशाली सृजनकला का रूप, पृष्ठभूमि के उपकरण अपेक्षाकृत सस्ते और उपलब्ध हैं। निर्माण प्रक्रिया में काफी लोगों की भागीदारी। श्रव्य और दृश्य दोनों लाभ।
सचल श्रव्य टेप	निर्माण में सस्ती। छोटे एवं बड़े समूह में प्रयोग की जा सकती है। सरलता से संशोधित, संपादित और अनुकूलित की जा सकती है। उपकरण आसानी से उपलब्ध हैं। परिचित माध्यम हैः कोई कहीं भी प्रयोग कर सकता है, अनेक लोगों की भागीदारी। विशेष लोगों तक संप्रेषण करना संभव। मनोरंजन, विचार और संदेश संप्रेषित करने में प्रभावशाली। व्याख्या तथा विवरण और अनुकूलन के लिए प्रयोग किया जा सकता है। कक्षा, भाषणों और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।
माध्यम	**हानियाँ**
टेलीविजन प्रसारण	जनता में भेद नहीं कर सकता। अत्यधिक समय की खपत तथा खर्चीला प्रसारण समय खरीदना महंगा तथा प्राप्त करना कठिन। जन सेवाएँ कम और व्यवसायिकता अधिक संदेश का भावी संदर्भ कठिन। लघु खंडों के कारण संदेश में सीमित संदर्भ के तारतम्य में व्यवसायिक बाधा।
दृश्य टेप	अभी भी काफी महंगी।

	पृष्ठभूमि छोटे समूहों तक सीमित प्रसारण क्वालिटी में और सुधार की आवश्यकता समानुरूप, हार्डवेयर, प्रारूप और उपकरण का अभाव। अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक तकनीक उपलब्ध नहीं।
रेडियो	खामोश परिवेश की आवश्यकता। दृश्य संदेश का अभाव। अनियमित श्रवण आदतों के कारण सब तक पहुँचाना कठिन। रेडियो भूमिका के रूप में सुना जाता है इसलिए समुचित ध्यान से न सुन कर टुकड़ों में सुनने की संभावना रहती है।
	लघु खंडों में होने के कारण समाचार सीमा संदेश का वापिस संदर्भ देना कठिन, श्रोता अत्यधिक अस्पष्ट, व्यापक और कोई विशिष्टता नहीं।
फिल्म की उपलब्धता:	निर्माण तथा पुनः प्रति बनाना महंगा। निर्माण प्रक्रिया में अत्यधिक समय की आवश्यकता वास्तविक तथा अंतिम रूप से पृष्ठभूमि की भागीदारी कम। संपादन और संशोधन में कठिन अल्प जीवन क्षणभंगूर प्रारूप। अस्पष्ट और व्यापक दर्शक।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) प्रिंट, फिल्म और प्रत्यक्ष पत्र मीडिया के कम से कम एक–एक लाभ का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) रेडियो, पर्चे, विवरण तथा पत्रिका मीडिया की कम से कम एक–एक हानि का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 सारांश

इस इकाई में हमने संचार के अनेक पारंपरिक मीडिया का समाज पर विशेषतः भारत के संदर्भ में ग्रामीण समाज पर उनके प्रभावों का अध्ययन किया है। हमने देखा कि देश के विभिन्न राज्यों में संदेश पहुँचाने, कहानी सुनाने, सामाजिक व्यवहार, धार्मिक मूल्य और सांस्कृतिक परंपराओं संबंधी सूचना पहुँचाने के लिए अनगिनत लोक मीडिया हैं। हमने आधुनिक रूप में प्रकट संचार के शताब्दियों में होने वाले विकास प्रक्रिया का भी अध्ययन किया है। कहा जाता है कि हम ऐसे मीडिया विश्व या वैश्विक गाँव में रह रहे हैं जहाँ पर सूचनाएँ हमारी ऊँगलियों पर मौजूद हैं। इसका श्रेय तकनीकी विकास को जाता है।

एक शताब्दी में ही जब हमने संचार क्षेत्र में विज्ञान और तकनीक की जबरदस्त उन्नति देखी है तो भविष्य में और क्या छिपा है, कहा नहीं जा सकता। फिर भी एक चीज में परिवर्तन नहीं हुआ है वह है– इंसान की संप्रेषण सहज आवश्यकता। इसी आवश्यकता ने संचार के नए मीडिया के विकास में सहायता प्रदान की है। यह प्रक्रिया मानव सभ्यता की उन्नति के साथ–साथ उन्नत होती जाएगी।

हमने आधुनिक संचार साधनों के तुलनात्मक लाभ और हानियों की जाँच की है। प्रभावशाली संप्रेषण के लिए संचार के सकारात्मक गुणों को शामिल करने वाला कोई एक संपूर्ण साधन नहीं है। इसलिए हमें विभिन्न संचार पारंपरिक तथा साथ में आधुनिक को एक दूसरे का पूरक होने की बात याद रखनी होगी।

2.7 शब्दावली

लोक साहित्य : विलियम थॉमस द्वारा 1845 में प्रयुक्त किया गया शब्द। इसमें पौराणिक कथाएँ, लोक गाथाएँ, किस्सें, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ, लोकगीत, वेशभूषाएँ और नृत्य, नृत्य नाटिकाएँ, गीत, पारंपरिक औषधियाँ तथा दीवारों पर लिखी गई लिखाइयाँ शामिल हैं।

लोक मीडिया : यह जर्मन शब्द वोक्स (valks) से आया है, जिसका अर्थ होता है लोग। यह सामान्य लोगों द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला मीडिया माना जाता है।

वृक्ष छाल : नील नदी के तटों पर उगने वाले वृक्ष छाल जो प्राचीन मिश्र में लेखन के लिए तैयार की जाती थी।

पांडुलिपि : यह लैटिन शब्द मेनुस (manus) से आया है जिसका अर्थ होता है हस्त और स्क्रिप्ट का अर्थ है– लेख या लिखना। जिसका अर्थ हुआ हाथ से लिखी सामग्री।

अपलिंक : भू–केंद्र से अंतरिक्ष में उपग्रह को टीवी सिग्नल भेजना।

डाउन लिंक : टेलीविजन के लिए एंटीना के माध्यम से उपग्रह से आने वाले सिग्नल को पकड़ना।

वैश्विक गाँव : उस विचार को प्रकट करने वाली अभिव्यक्ति की आधुनिक संचार तकनीक ने पूरे विश्व को एक गाँव की तरह सीमित कर दिया है।

सूचना सुपर राजमार्ग : आधुनिक संचार तकनीक की सहायता से सूचना स्थानांतरण की गति का वर्णन करने वाली अभिव्यक्ति।

इंटरनेट : डाटा स्थानांतरण करने के लिए कम्प्यूटरों को परस्पर जोड़ने वाली सार्वभौमिक प्रणाली।

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मेलिवन एल. डिफ्लेटर–एवरेटी इन डेनिस (1991), अंडरस्टैंडिंग मास कम्युनिकेशन, गोयल साब, नई दिल्ली।

सबीर घोष (1996), मास कम्युनिकेशन टुडे इन द इंडियन कांटेक्सट, प्रोफाइल पब्लिशर्स।

केवल जे. कुमार (1981), मास कम्युनिकेशन इन इंडिया, जयको पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई।

डे प्रदीप कुमार (1993), परस्पेक्टिव इन मास कम्युनिकेशन, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) संस्कृति का अर्थ है जीवनशैली। संस्कृति के तथ्यों में शामिल हैंः भाषा, कला, पौराणिकता, ज्ञान, धार्मिक परंपराएँ, परिवार, सामाजिक परंपराएँ और सरकार। संचार संस्कृति के तत्त्वों को संप्रेषण का माध्यम है। इस प्रकार इसका प्रत्यक्ष संप्रेषण आयाम है। संस्कृति के संरक्षण, रख–रखाव और विकास के लिए संचारण का होना आवश्यक है।

2) लोक मीडिया का अर्थ है ग्रामीण तथा कबीले के लोगों को उपलब्ध संचार के विभिन्न साधन। इसे दूसरे रूपों में पारंपरिक मीडिया', 'स्वदेशी संचार प्रणाली, वैकल्पिक मीडिया', 'समूह मीडिया', 'सस्ता मीडिया' आदि भी कहा जाता है।

   लोक मीडिया की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हो सकती हैंः

1) किसी सांस्कृतिक समूह या क्षेत्र के सभी लोगों की भागीदारी।

2) सस्ता तथा केवल स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री की आवश्यकता।

3) ये समूह की औसत योग्यता पर आधारित होते हैं। यह योग्यता बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के होती है।

4) चूँकि इनमें सबकी भागीदारी होती है, अतः गुणवत्ता या संख्या का कोई मानदंड नहीं होता।

5) ये प्रचार के लिए लोगों पर आधारित होते हैं, अतः इनका नियंत्रण स्वयं लोगों द्वारा किया जाता है।

6) ये व्यवसायिक नहीं होते। धन शामिल न होने से कोई कापी राइट नियम लागू नहीं होता।

7) इन्हें प्रायः सबका समर्थन प्राप्त होता है।

8) इन्हें अवसर या जनता विशेष के अनुसार अनुकूलित तथा पुनः तैयार कर लिया जाता है।

बोध प्रश्न II

1) पारंपरिक मीडिया का विभिन्न सभ्यताओं के द्वारा अनेक कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता थाः

– सामाजिक और सामुदायिक मूल्यों का संप्रेषण करना

– उपदेश और दीक्षा प्रदान करना

– पारंपरिक मूल्य संप्रेषित करना

– धार्मिक संबंधों को संरक्षित करना

– वैधानिक नियमों, आचरण नियम प्रदान करना

– कहानियाँ, नीतिकथाएँ, लोकोक्तियाँ संप्रेषित करना

– सुरक्षा, कृषि गतिविधियों जैसे सार्वजनिक कार्यों के लिए लोगों को सक्रिय करना

– सामाजिक प्रतिबद्धताओं और संयोजन को सुरक्षित रखना

2) तमाशा, कथा, जात्रा, नौटंकी, कव्वाली।

3) पौराणिक और दंत कथाओं को जोड़ने के लिए लोक कला के रूप में कठपुतली का प्रयोग किया जाता है। उपासना के रूप में इसका उदय हुआ। भारत में आम तौर पर विभिन्न चार प्रकार की कठपुतली आम है। ये हैंः सूत्रधारिका, छह कठपुतली, छाया कठपुतली, हस्त कठपुतली।

बोध प्रश्न III

1) गतिशील टाइपों का प्रयोग कर प्रिंटिंग की खोज करने वाला पहला व्यक्ति था जोंस गुटनबर्ग। उसकी खोज ने विश्व की काया पलट दी। प्रिंटिंग के परिणामस्वरूप भाषाएँ उत्पन्न हुई और विकास हुआ। स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों की माँग बढ़ने लगी। विज्ञान, दर्शन और धर्म में होने वाले विकास जनता को उपलब्ध होने लगे। संक्षेप में, प्रिंटिंग ने ज्ञान के प्रसार और विकास में काफी योगदान दिया।

2) भारत में टेलीविजन ने राष्ट्रीय निष्ठा, लोगों में वैज्ञानिक प्रकृति को प्रेरित करना, जन्म नियंत्रण और परिवार कल्याण को बढ़ावा, कृषि और ग्रामीण विकास को प्रेरणा, पर्यावरण व खेलों को बढ़ावा, महिला और बाल कल्याण

कार्यक्रमों को बढ़ावा, राष्ट्रीय भावना जागृत करना और देश की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत की वृद्धि में योगदान दिया।

टेलीविजन एक व्यसन बन सकता है जिससे शिक्षा तथा दूसरी गतिविधियों प्रभावित हो सकती है। यह संस्कृति, सार्वभौमिक विचार तथा लोगों के पारंपरिक मूल्यों पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है।

3) इंटरनेट एक सार्वभौमिक प्रणाली है, जिसमें टेलीफोन और मोडेम का प्रयोग कर डाटा स्थानांतरण के लिए, एक कम्प्यूटर को दूसरे कम्प्यूटर से जोड़ा जा सकता है। इंटरनेट से किसी भी दूरी पर एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर में सूचना शीघ्र संप्रेषण कार्य को सरल बना दिया है।

बोध प्रश्न IV

1) प्रिंट मीडियाः मुद्रित सामग्री की जीवन अवधि अधिक होती है।

फिल्मः सशक्त सृजनात्मक कला रूप

प्रत्यक्ष पत्रः संदेश व्यैक्तिक हो सकता है।

2) रेडियोः दृश्य संदेश का अभाव

पर्चे/विवरण : प्रभाव मापना कठिन

मैगजीन (पत्रिका): अंतिम तिथि से काफी पहले हो सकती है इसलिए यह सही समय – वाली नहीं मानी जा सकती।